स्थित्यै दण्डयतो दण्ड्यान् परिणेतुः प्रसूतये ।

अप्यर्थकामौ तस्यास्तां धर्म एव मनीषिणः ।।25।।

अन्वय दण्ड्यान् स्थित्यै दण्डयतः प्रसूतये परिणेतुः मनीषिणः तस्य अर्थकामौ अपि धर्म एव आस्ताम्।

अनुवाद लोकमर्यादा के पालन हेतु ही (द्वेष के कारण नहीं) अपराधियों के दण्ड देने वाले, सन्तान के लिए ही (भोगविलास के लिए नहीं) विवाह करने वाले, विद्वान् (बुद्धिमान्) राजा दिलीप के अर्थ और काम भी (लोकप्रतिष्ठा तथा वंशधर पुत्र को जन्म देने के कारण) धर्म ही बन गए थे।

टिप्पणियां

विशेष अपराधियों को दण्ड देना राजा का कर्त्तव्य है। वह उन्हें शारीरिक दण्ड दे सकता है और धन का दण्ड भी। परन्तु राजा दिलीप धन संग्रह करने के लोभ में आकर ही अपराधियों को धन का दण्ड नहीं देते थे, अपितु अपराध के निवारण के उद्देश्य से ही अपराधियों को दण्डित करते थे जिससे राज्य में शान्ति और स्थिरता रहे और प्रजा निर्भय होकर अपने-अपने कर्म में प्रवृत्त रहे।

स्थित्यै लोकप्रतिष्ठा के लिए, राज्य में शान्ति और स्थिरता के लिए।

दण्डयान् दण्ड़य, दण्डम् अर्हन्तीति दण्ड्याः, तान्, अपराधी लोग।

दण्डयत धातु दण्ड् णिच् शतृ, षष्ठी विभक्ति (अपराधी को) दण्ड देते हुए। कहा भी है:

अदण्ड्यान् दण्डयन् राजा दण्ड्यांश्चैवाप्यदण्डयन्।

अयशो महदाप्नोति नरकञ्चैव गच्छति।।

'दण्ड्' का अर्थ यहां पैसे के रूप में सजा से ही है, अन्यथा 'अर्थ' की व्याख्या नहीं हो सकती।

परिणेतुः परि उपसर्ग धातु नि शत ृषष्ठी विभक्ति, एकवचन (सन्तान प्राप्ति के उद्देश्य से) विवाह करने वाले।

प्रसूतये सन्तान के लिए।

अर्थकामौ- अर्थश्च कामश्च इति अर्थकामौ (द्वन्द्व समास)। मध्यस्थ (बीच के) पुरुषार्थद्वय। चार पुरुषार्थ हैं: धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष।

धर्म एव अर्थ और काम यद्यपि व्यक्तिगत स्वार्थ साधन के लिए उपादेय होते हैं परन्तु राजा दिलीप के लिए अर्थ और काम अपने व्यक्तिगत सुख के लिए नहीं थे अपितु दूसरों के सुख के लिए ही थे। अतः परोपकार के लिए होने के कारण उनके अर्थ तथा काम भी धर्म ही थे। राजा दिलीप अपराधियों को दण्ड देने के लिए ही उनसे धन लेते थे व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए नहीं। अतः उनका अर्थ भी धर्म का ही रूप था। वे विषयभोग के लिए विवाह नहीं करते थे, अपितु पुत्र को जन्म देकर वंश परम्परा की निरन्तरता को बनाए रखने के लिए 'काम' में प्रवृत्त होते थे। 'सन्तान' शब्द का एक अर्थ इसी मानवपरम्परा का विस्तार है। इसी प्रकार अर्थ अपने लिए नहीं अपितु प्रजा के कल्याण के लिए था। अतः उसके अर्थ और काम परार्थ के लिए होने के कारण धर्म ही थे। कहा गया है - ''धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ।'' (भगवद्गीता 7/11)

आस्ताम् धातु अस् लङ्, अन्य पुरुष, द्विवचन, थे।